

# रमज़ान के रोज़े और उसके क्रियाम (तरावीह) की फज़ीलत

[ हिन्दी – Hindi – هندی ]

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

# فضل صيام رمضان وقيامه

« باللغة الهندية »

عبد العزيز بن عبد الله بن باز

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا،  
وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफस की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

## रमज़ान के रोज़े और उसके क्रियाम (तरावीह) की फज़ीलत

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की ओर से हर मुसलमान के नाम, अल्लाह मुझे और उन्हें ईमानवालों के रास्ते पर चलाए और मुझे और उन्हें कुरआन व सुन्नत के समझने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

ये रमज़ान के रोज़े और उसके क्रियाम (तरावीह) की फज़ीलत, तथा उसके अंदर नेक कामों द्वारा एक दूसरे से आगे बढ़ने की फज़ीलत से संबंधित कुछ नसीहतें हैं, साथ ही कुछ ऐसे महत्वपूर्ण अहकाम का वर्णन है जो कुछ लोगों पर गुस रह जाते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित हैं कि आप अपने सहाबा (साथियों) को रमज़ान के महीने के आगमन की शुभसूचना देते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम उन्हें यह बतलाते थे कि यह ऐसा महीना है जिसमें दया व करुणा के दरवाज़े और स्वर्ग के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, नरक के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शैतानों को जकड़ दिया जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है: “जब रमज़ान की पहली रात होती है तो स्वर्ग के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं चुनाँचे उनमें से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, और नरक (जहन्नम) के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं चुनाँचे उनमें से कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता, और शैतानों को जकड़ दिया जाता है, और एक पुकारने वाला पुकारता है कि ऐ भलाई के चाहने वाले! आगे बढ़, और ऐ बुराई के चाहने वाले! बाज़ आ जा, और अल्लाह तआला हर रात अपने कुछ बन्दों को जहन्नम से आज़ाद करता रहता है।”<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> (सहीह बुखारी, किताबुस्सौम (१८००), सहीह मुस्लिम, किताबुस्सि-याम (१०७९), सुनन

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : "बरकत का महीना रमज़ान तुम्हारे पास आ चुका है, जिसमें अल्लाह तुमको ढाँप लेता है तो रमहत उतारता है, गुनाहों को मिटाता है और दुआ क़बूल करता है। अल्लाह इस महीने में तुम्हारे (नेकी में) एक दूसरे से आगे बढ़ने की चेष्टा को देखता है तो तुम्हारे ऊपर अपने फरिशतों के सामने गर्व करता है। अतः तुम अपनी ओर से अल्लाह को नेकी व भलाई दिखलाओ, क्योंकि वह व्यक्ति अभागा (बदनसीब) है जो इस महीने में अल्लाह की रहमत (दया) से वंचित रह जाए।" इस हदीस को हैसमी ने मजमउज़्ज़वाइद में (३/ १४२) अत्तबरानी अलकबीर की ओर मन्सूब किया हैं।

---

तिर्मिज़ी, किताबुस्सौम (६८२), सुनन नसाई, किताबुस्सियाम (२१०६), सुनन इब्ने माजा, किताबुस्सियाम (१६४२), सुनन दारमी, किताबुस्सौम, (१७७५).

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : “जिस व्यक्ति ने ईमान के साथ पुण्य की आशा रखते हुए रमज़ान का रोज़ा रखा तो उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जाएंगे। और जिसने ईमान की हालत में पुण्य की आशा रखते हुए रमज़ान का क्रियाम किया (तरावीह की नमाज़ पढ़ी) तो उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जायेंगे। और जिस ने ईमान रखते हुए पुण्य की आशा में क़द्र वाली रात में क्रियाम किया (इबादत में बिताया) उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिये जाएंगे।<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी, किताब सलातुत-तरावीह (१९१०), सहीह मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफिरीन व क़सरुहा (७६०), सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सौम (६८३), सुनन नसाई किताबुस्सियाम (२२०३), सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात (१३७२), मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ २४१), सुनन दारमी किताबुस्सौम (१७७६)।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह सर्वशक्तिमान फरमाता है : आदम के बेटे का हर कार्य उसी के लिए है, नेकी को उसके दस गुना से सात सौ गुना तक कर दिया जाता है सिवाय रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उस का बदला दूँगा। उसने अपनी कामवासना और अपना खाना, पानी मेरे लिये त्याग दिया। रोज़ेदार के लिए दो खुशियों के अवसर हैं, एक खुशी उसे रोज़ा खोलते समय होती है और एक खुशी उस वक़्त होगी जब वह अपने रब से मिलेगा। रोज़ेदार के मुँह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी की सुगंध से भी अधिक अच्छी है।"<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी, किताबुस्सौम (१८०५), सहीह मुसलिम, किताबुस्सियाम (११५१), सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सौम (७६४), सुनन नसाई किताबुस्सियाम (२२१५), सुनन इब्ने माजा, किताबुस्सियाम (१६३८), मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ ५ १६).

रमज़ान के रोज़े और उसके क्रियाम की फज़ीलत, तथा स्वयं रोज़े की फज़ीलत में वर्णित हदीसों बहुत अधिक हैं।

अतः एक मोमिन को चाहिए कि वह इस बहुमूल्य अवसर से लाभ उठाए और वह अवसर यह है कि अल्लाह ने उस पर उपकार करते हुए उसे रमज़ान का महीना प्रदान किया, तो उसे चाहिए कि वह नेकियों की तरफ जल्दी करे और बुराइयों से दूर रहे और उन कर्तव्यों के पालन में संघर्ष करे जिन्हें अल्लाह ने उसके ऊपर अनिवार्य किया है विशेषकर पाँचों नमाज़ों, क्योंकि यह इस्लाम का स्तंभ है और शहादतैन (ला इलाहा इल्लल्लाह व मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) के बाद सबसे बड़ा फरीज़ा (कर्तव्य) है। अतः हर मुसलमान मर्द व औरत पर इन नमाज़ों की पाबंदी करना और इन्हें उनके समय पर इतमिनान और विनम्रता के साथ अदा करना अनिवार्य है।

तथा मर्दों के हक़ में इसका एक महत्वपूर्ण कर्तव्य इसे जमाअत के साथ अल्लाह के उन घरों में अदा करना है,

अल्लाह ने जिन को बुलन्द करने और जिन में अपना नाम जपने का आदेश दिया है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّٰكِعِينَ﴾ (سورة البقرة: ٤٣)

"और नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो।" (सूरतुल बकरा : ४३).

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ﴾ (سورة البقرة:

(२३८)

"नमाज़ों की हिफाज़त करो विशेष रूप से बीच वाली नमाज़ की और अल्लाह तआला के लिए अदब से खड़े रहो।" (सूरतुल बकरा : २३८).

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَٰشِعُونَ﴾ (سورة المؤمنون: १-२)

"निःसंदेह ईमान वालों ने सफलता प्राप्त करली जो अपनी नमाज़ में खुशूअ (विनमता) अपनाते हैं।" (सूरतुल मूमेनून : १-२).

यहाँ तक कि अल्लाह ने फरमाया:

﴿أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾ (सुरة

المؤمنون : १०-११)

(जो अपनी नमाज़ों की देख भाल करते हैं।) "यही लोग वारिस हैं जो फिरदौस (स्वर्ग) के वारिस होंगे जहाँ वे हमेशा रहेंगे।"

(सूरतुल मूमेनून : १०-११).

और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "हमारे और उनके बीच नमाज़ का अहद व पैमान है तो जिसने इसे छोड़ दिया उसने कुफ्र किया।"<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> सुनन तिमिज़ी, किताबुल ईमान (२६२१), सुनन नसाई, किताबुस्सलात (४६३), सुनन इब्ने माजा, किताब इक़ामतुस्सलात (१०७९), मुसनद अहमद बिल हंबल (५/ ३४६)

नमाज़ के पश्चात सब से महत्वपूर्ण कर्तव्य ज़कात का अदा करना है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا

الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ﴾ (سورة البينة: ٥)

"उन्हें इस के सिवा कोई आदेश नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की उपासना करें उसी के लिए धर्म को खालिस रखें इब्राहीम हनीफ के धर्म पर और नमाज़ को कायम रखें और ज़कात देते रहें, यही है धर्म सीधी मिल्लत का।" (सूरतुल बैयिना: ५)

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ (سورة النور:

(५६)

"नमाज़ की पाबंदी करो ज़कात अदा करो और अल्लाह तआला के रसूल की आज्ञा पालन में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाय।" (सूरतुन्नूर: 56)

अल्लाह की महान किताब और सुन्नत इस बात का तर्क देते हैं कि जिसने अपने धन का ज़कात भुगतान नहीं किया है वह उसी के द्वारा क्रियामत के दिन दंडित किया जायेगा।

नमाज़ और ज़कात के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण बात रमज़ान के रोज़े हैं और यह इस्लाम के उन पाँच स्तंभों में से एक स्तंभ है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन में उल्लिखित हैं: “इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर स्थापित है, ला इलाहा इल्लल्लाह और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही

देना, नमाज़ स्थापित करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना और खान-ए-काअबा का हज्ज करना।" <sup>1</sup>

मुसलमान के ऊपर अनिवार्य है कि वह अपने रोज़े और क्रियाम (तरावीह) को उन बातों और कार्यों से सुरक्षित रखे जिन को अल्लाह ने उस के ऊपर हराम (निषिद्ध) ठहराया है, क्योंकि रोज़े का मक़सद अल्लाह का आज्ञा पालन, उसकी वर्जित चीज़ों का सम्मान करना, और अपने स्वामी की पैरवी में अपनी इच्छा का विरोध करने में संघर्ष करना, और अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से सब्र करने (बाज़ रहने) पर अपने आपको आदी बनाना है। उसका मक़सद मात्र खाना पानी और अन्य रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों का त्यागना नहीं है। इसीलिए सहीह हदीस में नबी

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी, किताबुलईमान (८), सहीह मुस्लिम किताबुलईमान (१६), सुनन तिर्मिज़ी किताबुल ईमान (२६०९), सुनन नसाई किताबुल ईमान (५००१) मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ २६).

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फरमाया : "रोज़ा ढाल है, अतः जब तुम में से किसी के रोज़ा का दिन हो तो वह अश्लील बातें न करे, शोर-गुल न करे, अगर उसे कोई बुरा-भला कहे (गाली दे) या उस से लड़ाई झगड़ा करे, तो उस से कह दे कि: मैं रोज़े से हूँ।"<sup>1</sup>

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहीह हदीस में वर्णित है कि आप ने फरमाया : “जो व्यक्ति झूठी बात कहने और झूठ पर अमल करने और मूर्खता से न बचे तो अल्लाह तआला को

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी किताबुस्सौम, (१९०४), सहीह मुस्लिम किताबुस्सि-याम (११५१), सुनन तिमिज़ी, किताबुस्सौम (७६४), सुनन नसाई किताबुस्सियाम, (२२१६), सुनन अबू दाऊद किताबुस्सौम (२३६३).

इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि वह अपना खाना पानी त्याग कर दे।<sup>1</sup>

इन प्रमाणों और इनके अलावा अन्य प्रमाणों से ज्ञात हुआ कि रोज़ेदार के ऊपर उन सभी चीज़ों से बचना अनिवार्य है जिन को अल्लाह ने उसके ऊपर हराम करार दिया है और उन सभी चीज़ों की पाबंदी करना अनिवार्य है जिन को अल्लाह ने उस के ऊपर वाजिब करार दिया है, और इसी अवस्था में उस के लिए बख़िश, नरक से मुक्ति, और रोज़े व तरावीह की स्वीकृति की आशा की जा सकती है।

कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे कुछ लोग अनभिग रहते हैं :

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी, किताबुल अदब (१९०३), सुनन तिमिज़ी किताबुस्सौम (७०७), सुनन अबू दाऊद किताबुस्सौम (२३६२), सुनन इब्ने माजा किताबुस्सियाम (१६८९), मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ ५०५).

उन्हीं में से एक यह है कि मुसलमान के ऊपर अनिवार्य हैं कि वह ईमान के साथ सवाब की आशा रखते हुए रोज़ा रखे, दिखावे के लिए, नाम कमाने के लिए, लोगों की देखा-देखी या अपने परिवार या अपने शहर के लोगों का अनुकरण करते हुए रोज़ा न रखे। बल्कि उस के ऊपर अनिवार्य यह है कि उसे रोज़ा रखने पर उभारने वाली चीज़ उसका यह ईमान हो कि अल्लाह ने इसे उसके ऊपर अनिवार्य किया है, और इस बारे में वह अपने रब से अज़्र व सवाब की आशा रखे।

इसी प्रकार रमज़ान के क्रियाम (अर्थात तरावीह) के लिए भी ज़रूरी है कि मुसलमान उसे ईमान के साथ अज़्र व सवाब की आशा रखते हुए करे, किसी अन्य कारण से न करे। इसी लिये आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"जिस ने ईमान के साथ पुण्य की आशा रखते हुए रमज़ान का रोज़ा रखा तो उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जाएंगे। और जिस ने ईमान की हालत में पुण्य की आशा रखते

हुए रमज़ान का क्रियाम किया (तरावीह की नमाज़ पढ़ी) तो उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जायेंगे। और जिस ने ईमान रखते हुए पुण्य की आशा में क्रद्र वाली रात में क्रियाम किया (इबादत में बिताया) उसके पिछले (छोटे-छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जाएंगे।<sup>1</sup>

उन्हीं बातों में से जिन का हुकम कुछ लोगों पर गुप्त रह जाता है यह है कि कभी कभार रोज़ेदार घाव, या नकसीर से पीड़ित हो जाता है, या उसकी इच्छा व नियंत्रण के बिना उसके गले में पानी या पेट्रोल चला जाता है, तो इन सभी चीज़ों से रोज़ा ख़राब नहीं होता है, परन्तु जो व्यक्ति जानबूझ कर उल्टी कर दे

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी, किताब सलातुत-तरावीह (१९१०), सहीह मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफिरीन व क़सरुहा (७६०), सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सौम (६८३), सुनन नसाई किताबुस्सियाम (२२०३), सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सलात (१३७२), मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ २४१), सुनन दारमी किताबुस्सौम (१७७६).

तो उस का रोज़ा खराब हो जायेगा, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि: “जिस पर क़य (उल्टी) ग़ालिब आगई उस पर कोई क़ज़ा नहीं और जिसने जानबूझ कर क़य किया वह (रोज़े की) क़ज़ा करे।”<sup>1</sup>

उन्हीं बातों में से एक यह है कि रोज़ेदार को कभी जनाबत के स्नान को फ़ज़ के निकलने तक विलंब करना पड़ता है, और कुछ औरतों को हैज़ (माहवारी) अथवा निफ़ास (प्रसव) के स्नान को फ़ज़ निकलने तक विलंब करना पड़ता है जब वह फ़ज़ से पहले पाकी को देखती है, तो ऐसी अवस्था में उस पर रोज़ा रखना ज़रूरी है, और फ़ज़ उदय होने के बाद तक स्नान को विलंब करने में कोई रुकावट नहीं है, परन्तु उसके लिए उसे

---

<sup>1</sup> सुनन तिमिज़ी, किताबुस्सौम (७२०), सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सौम (२३८०), सुनन इब्ने माजा किताबुस्सियाम (१६७६) मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ ४९८), सुनन दारमी किताबुस्सौम (१७२९).

सूर्य के उदय होने तक विलंब करने की अनुमति नहीं है, बल्कि उस के ऊपर ज़रूरी है कि वह सूर्य के निकलने से पहले ही स्नान करे और फ़ज्र की नमाज़ पढ़े। इसी प्रकार जनाबत वाले के लिए सूर्य के निकलने के बाद तक स्नान को विलंब करना जायज़ नहीं है, बल्कि उसके ऊपर अनिवार्य है कि वह स्नान करे और सूर्य के निकलने से पहले ही फ़ज्र की नमाज़ पढ़े, जबकि पुरुष के ऊपर ज़रूरी है कि वह इस में जल्दी करे ताकि वह फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ सके।

तथा जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं खराब होता है :

खून जाँच करवाना, ऐसा इन्जेक्शन लगवाना जो ख़ूराक का काम नहीं करता है, परन्तु अगर हो सके तो उसे रात तक विलंब करना बेहतर और अधिक सावधानी का पात्र है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : "जो चीज़

तुम्हें शंका (सन्देह) में डालने वाली हो उसे छोड़ कर उस चीज़ को अपना लो जो तुम्हें शंका में डालने वाली न हो।"<sup>1</sup>

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : "जो व्यक्ति शुब्हात (सन्देहों) से बच गया उसने अपने दीन और इज़्ज़त व आबरू को बचा लिया।"<sup>2</sup>

उन्हीं बातों में से जिन का हुक्म कुछ लोगों पर गुप्त रह जाता है: नमाज़ में इतमिनान व स्थिरता का न पाया जाना है, चाहे वह नमाज़ फ़र्ज हो या नफल हो। और अल्लाह के रसूल

---

<sup>1</sup> सुनन तिर्मिज़ी, सिफतुल क्रियामह वर्रिकाक़ वल-वरअ (२५१८) सुनन नसाई किताबुल अशरिबा (५७११), मुसनद अहमद बिन हंबल (१६२००) सुनन दारमी किताबुल बुयूअ (२५३२).

<sup>2</sup> सहीह बुखारी, किताबुल ईमान (५२), सहीह मुस्लिम किताबुल मुसाक़ात (१५९९), सुनन तिर्मिज़ी किताबुल बुयूअ (१२०१५), सुनन नसाई किताबुल बुयूअ (४४५३), सुनन अबू दाऊद किताबुल बुयूअ (३३२९), सुनन इब्ने माजा किताबुल फितन (३९८४), मुसनद अहमद बिन हंबल (४/२७०) सुनन दारमी किताबुल बुयूअ (२५३१).

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीसों यह इंगित करती हैं कि इतमिनान व स्थिरता नमाज़ के स्तंभों में से एक स्तंभ है जिस के बिना नमाज़ सहीह नहीं होती है, और वह नमाज़ के अंदर स्थिरता और विनमता अपनाना तथा जल्द बाज़ी से काम न लेना है यहाँ तक कि हर जोड़ अपने स्थान पर लौट आए। बहुत सारे लोग रमज़ान में तरावीह की नमाज़ इस तरह पढ़ते हैं कि वे उसे न तो समझते हैं और न ही उस में इतमिनान व स्थिरता से काम लेते हैं, बल्कि उस में कुछ चोंच मारते हैं। जबकि इस तरीके पर यह नमाज़ बेकार (व्यर्थ) है, और ऐसी नमाज़ पढ़ने वाला गुनाहगार है उसे सवाब नहीं मिलता है। तथा उन्हीं बातों में से जिनका का हुक्म कुछ लोगों पर गुप्त रह जाता है: कुछ लोगों का यह समझना है कि बीस रकअत से कम तरावीह का पढ़ना जायज़ नहीं है, इसी तरह कुछ लोगों का यह समझना है कि ग्यारह रकअत या तेरह रकअत से अधिक तरावीह पढ़ना जायज़ नहीं है, हालांकि ये सब भ्रम हैं

जो अपनी जगह में नहीं हैं बल्कि वह एक गलती है जो दलीलों के खिलाफ है।

अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित सहीह हदीसों इस बात को इंगित करती हैं कि रात की नमाज़ में विस्तार है, इसकी कोई निर्धारित सीमा नहीं है जिसका विरोध करना जायज़ नहीं, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है कि आप रात की नमाज़ ग्यारह रकअत पढ़ते थे और कभी कभार आप ने तेरह रकअत पढ़ी और कभी कभी रमज़ान के महीने में और अन्य महीनों में इस से कम नमाज़ पढ़ी, और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रात की नमाज़ के बारे में पूछा गया तो फरमाया: “दो-दो रकअत है, तो जब तुम में से किसी को सुबह होने का भय हो

तो एक रकअत नमाज पढ़ ले, यह उसकी पढ़ी हुई नमाज़ को  
वित्र बना देगी।" <sup>1</sup>

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ान और अन्य  
महीनों में कोई विशिष्ट संख्या निर्धारित नहीं किया है। इसीलिए  
उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समयकाल में सहाबा रज़ियल्लाहु  
अन्हुम ने कभी तेईस (२३) रकअत तरावीह पढ़ी और कभी  
ग्यारह रकअत तरावीह पढ़ी है। ये सब उमर रज़ियल्लाहु अन्हु  
से और आपके समयकाल में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से  
प्रमाणित है।

---

<sup>1</sup> सहीह बुखारी किताबुस्सलात (४६०), सहीह मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफिरीन व  
कसुरहा (७४९), सुनन तिर्मिज़ी किताबुस्सलात (४६१), सुनन नसाई किताब क्रियामुल्लैल  
(१६९१), सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात (१३२६), सुनन इब्ने माजा किताब  
इकसमतुस्सलात (११७५), मुसनद अहमद बिन हंबल (२/ १०२), मुवत्ता इमाम मालिक  
किताबुन्निदा लिस्सलात (२६९)।

तथा कुछ सलफ सालिहीन रहिमहुमुल्लाह रमज़ान में छत्तीस रकअत तरावीह और तीन रकअत वित्र पढ़ते थे, और कुछ तो इक्कालीस रकअत पढ़ते थे। इस बात को शैखुल इस्लाम इब्ने तैमियह रहिमहुल्लाह और अन्य विद्वानों ने उनसे वर्णन किया है। तथा आप रहिमहुल्लाह ने वर्णन किया है कि इस संबंध में मामले के अंदर विस्तार है और यह भी बयान किया है कि जो क़िराअत और रूकूअ व सज्दे लम्बे करता है उस के लिए बेहतर है कि रकअतों की संख्या कम कर दे, और जो क़िराअत और रूकूअ व सज्दे हल्के करता है, वह रकअतों की संख्या बढ़ा दे। यह आप रहिमहुल्लाह की बात का अर्थ है।

और जो व्यक्ति आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत में मननचिन्तन करेगा उसे पता चल जायेगा कि इन सब में सबसे बेहतर रमज़ान और अन्य महीनों में ग्यारह रकअत या तेरह रकअत तरावीह की नमाज़ पढ़ना है, क्योंकि अक्सर हालतों में यही आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

अमल के अनुसार है, और इसलिए कि यही नमाज़ियों के लिये अधिक आसान है और खुशूअ व इतमिनान के अधिक निकट है, और जिस ने इसपर वृद्धि की तो कोई हरज और कोई घृणा की बात नहीं है जैसा कि यह बात गुजर चुकी है।

और जो व्यक्ति इमाम के साथ रमज़ान का क्रियाम करता (तरावीह पढ़ता) है उस के लिये बेहतर यह है कि वह इमाम के साथ ही पलटे, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि: “जब आदमी इमाम के साथ तरावीह पढ़ता है यहाँ तक कि वह फारिग हो जाता है तो अल्लाह उसके लिये एक रात का क्रियाम लिखता है।”<sup>1</sup>

---

<sup>1</sup> (सुनन तिर्मिज़ी किताबुस्सौम (८०६), सुनन नसाई किताबुस सहव (१३६४), सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात (१३७५), सुनन इब्ने माजा किताबुल इक़ामतुस्सलात (१३२७), मुसनद अहमद बिन हंबल (५ध१६०) सुनन दारमी किताबुस्सौम (१७७७).

सभी मुसलमानों के लिए इस सम्मानित महीने में अनेक प्रकार की उपासनाओं में संघर्ष करना धर्मसंगत है - जैसे नफल नमाज़, समझबूझ और मननचिंतन के साथ कुरआन की तिलावत, अधिक से अधिक सुबहानल्लाह, ला-इलाहा इल्लल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाहु अक्बर पढ़ना, इस्तिग़फ़ार और शरई दुआयें करना, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना, और अल्लाह तआला की ओर लोगों को बुलाना, निर्धनों और गरीबों का ध्यान रखना, माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना, रिश्तेदारी को जोड़ना, पड़ोसी का सम्मान करना, बीमार की तीमारदारी करना और इसके अलावा अन्य प्रकार के भलाई के काम। क्योंकि पिछली हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : "अल्लाह इस महीने में तुम्हारे (नेकी में) एक दूसरे से आगे बढ़ने की चेष्टा को देखता है तो तुम्हारे ऊपर अपने फरिश्तों के सामने गर्व करता है। अतः तुम अपनी ओर से अल्लाह को नेकी व भलाई दिखलाओ, क्योंकि वह

व्यक्ति अभागा (बदनसीब) है जो इस महीने में अल्लाह की रहमत (दया) से वंचित रह जाए।"

और चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सही हदीस में फरमान है कि "रमज़ान का उमा एक हज्ज के बराबर है" - या आप ने फरमाया - "मेरे साथ हज्ज करने के बराबर है!"<sup>1</sup>

और इस मुबारक महीने में अनेक प्रकार की नेकियों में पहल करने और एक दूसरे से आगे बढ़ने की वैद्वता को दर्शाने वाली हदीसों और आसार बहुत हैं।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें और सभी मुसलमानों को उस चीज़ की तौफ़ीक़ दे जिस में उस की प्रसन्नता हो, और हमारे रोज़ों और क्रियाम (तरावीह) को क़बूल करे, हमारी स्थितियों को

---

<sup>1</sup> (सुनन तिर्मिज़ी किताबुल हज्ज (९३९), सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात (१९८८), सुनन इब्ने माजा किताबुल मनासिक (१३२७), मुसनद अहमद बिन हंबल (६/ ३७५) सुनन दारमी किताबुल मनासिक (१८६०).

सुधार दे, और हम सबको पथभ्रष्ट करने वाले फित्रों से सुरक्षित रखे। तथा हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह मुस्लिम नेताओं का सुधार करे, और उन्हें हक़ के ऊपर एकजुट कर दे, निःसंदेह वह इसका स्वामी और इसपर शक्तिमान है।